भूकम्प से बचाव के लिए बांधों का परीक्षण जरूरी

शार्टकोर्स संपन्न

■ निर्माण सामग्री की जांच अवश्य हो : लैरी नूस

■ चार दिन में दी गयीं महत्वपूर्ण जानकारियां

कानपुर (एसएनबी)। अमेरिका कंक्रीट बांध के विशेषज्ञ लैरी नूस ने कहा कि भूकम्प के दौरान होने वाले जनहानि को बचाने के लिए बांधों का गहन परीक्षण जरूरी है।

श्री नूस आईआईटी आउटरिच प्रेक्षागृह में आयोजित बांधों के निर्माण व भूकम्प विषयक पांच द्विवसीय शार्ट कोर्स कार्यक्रम के समापन समारोह में बतौर मुख्यवक्ता बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि बांधों को भूकम्प के दौरान होने वाली जनहानि से बचाने के लिए निर्माण में शामिल सामग्रियों की जांच पड़ताल बहुत जरूरी है। श्री नूस ने अमेरिका में निर्मित दो बांधों के निर्माण सामग्रियों की तारीफ की। उन्होंने कहा कि भारत में अगर बांधों की निर्माण सामग्रियों पर ध्यान दिया जाय तो भूकम्प के दौरान होने वाली जनहानि दूर की जा सकती है। बांधों की गहन परीक्षण के दौरान उनके निर्माण में प्रयोग सामानों तथा भूकम्प के खतरों की जांच जरूरी है।

प्रो. अनिल कुमार चोपड़ा ने कहा कि विकासशील देशों में बढ़ती हुई जनसंख्या, गरीबी, आधुनिक निर्माण सामग्री तथा जरूरी कार्यकुशलता के कारण जनजीवन की हानि का जोखिम और भी बढ़ गया है। प्रो. चोपड़ा नेकहा कि प्रचलित निर्माण शैली में एकदम से क्रांतिकारी परिवर्तन की संभावना न होने से आधुनिक निर्माण रीति का प्रयोग व्यवहारिक नहीं है। उन्होंने ने कहा कि जहां ज्यादा जरूरत है, वहीं न्यूनतम मात्रा में सीमेन्ट व स्टील का प्रयोग किया जाए। अन्य स्थानों पर उपलब्ध स्थानीय सामग्री का प्रयोग भूकम्प जैसी स्थिति से निपटने में कामयाब हो सकता है।

आईआई टी के निदेशक प्रो. संजय डी. धांडे ने कहा कि चार दिवसीय भूकम्प सम्बंधी शार्ट कोर्स कार्यक्रम की तारीफ करते हुए कहा कि इस प्रकार के आयोजनों से देश तथा विदेश में भूकम्प के दौरान होने वाली जनहानि को समाप्त किया जा सकता है।

उन्होंने कहा कि चार दिन तक चले शार्ट कोर्स के दौरान दोनों वैज्ञानिकों ने कई अत्यन्त महत्वपूर्ण तकनीकी ज्ञान प्रस्तुत किये। प्रो. धाड़े ने कहा कि कई साल के बाद आईआईटी में इस प्रकार के महत्वपूर्ण कार्यक्रम आयोजित किये गये।

अन्त में कार्यक्रम समन्वयक डा. सुधीर जैन ने दोनों वक्ताओं तथा प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया। इसके पूर्व एनआईसीईई के विभागाध्यक्ष प्रो. ओंकार दीक्षित ने निदेशक, दोनों वक्ताओं तथा प्रतिभागियों का स्वागत किया।

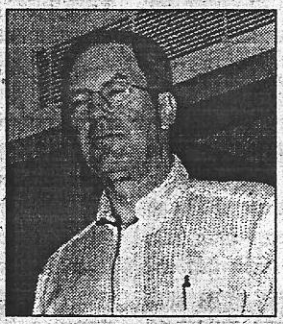

सहारा 5/3/09